॥ ओ३म् ॥

स्मृति सुमनः–

दैनिक यज्ञ-प्रकाश

पावन स्मृति

महाशय तीर्थराम जी एवं श्रीमती राजवन्ती जी

लेखिकाः–

श्रीमती सन्तोष रानी

महाशय तीर्थराम जी एवं श्रीमती राजवन्ती जी

॥ ओ३म् ॥

महाशय तीर्थराम जी एवं श्रीमती राजवन्ती जी की पावन स्मृति में सप्रेम उपहार

द्वारा–

सत्यव्रत, देवराज, रमेशचन्द्र, बंसीलाल, सन्तोष रानी, विनोद गुप्ता
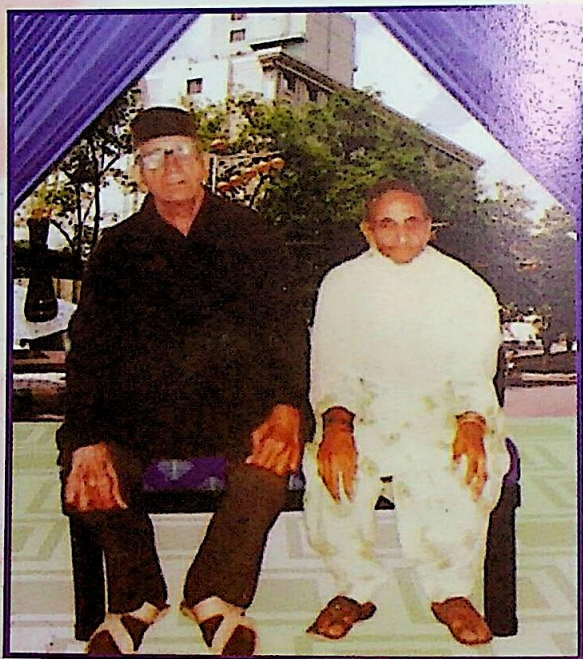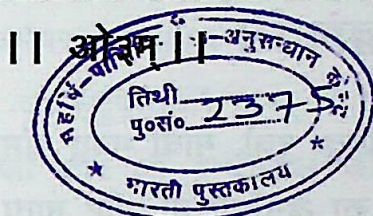
गुप्ता मैडिकल एजेन्सीज़
महाजन मैडिकल एजेन्सीज़ } शालामार रोड, जम्मू

गुप्ता एन्ड कम्पनी
गुप्ता मैडिकल स्टोर } संकट मोचन मार्ग, मीरजापुर

सम्पादक–

आचार्य विद्याभानु जी शास्त्री, जम्मू

एक श्रद्धांजलि

"अनुव्रतः पितुः पुत्रो, मात्रा भवतु संमनाः"–अथर्ववेद
पुत्र पिता का अनुव्रती हो और माता के अनुरूप मन वाला हो।"

स्वर्गीय महाशय तीर्थराम जी एक आदर्श सत्पुरुष श्रेष्ठ आर्य थे उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजवन्ती जी उनकी सहधर्म–चारिणी थी। दोनों का जीवन सद्गृहस्थ के अनुरूप एक आदर्श जीवन था। ऋषियों के आदेशों का पालन करते हुए जहां उन्होंने अपने जीवन को धर्माचरण से सुशोभित किया वहीं अनेक कष्टों और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने गृहस्थ को सुखी और समृद्ध बनाया। धर्मपूर्वक अर्थ का संचय करते हुए अपने गृहस्थ जीवन को समर्थ और सार्थक बनाया।

सन्तति गृहस्थरूपी वृक्ष के फल हैं। वृक्ष जैसा होता है उसके फल भी वैसे ही होते हैं, और फलों से ही वृक्ष की पहचान होती है। महाशय तीर्थराम जी के चार सुपुत्र और दो सुपुत्रियाँ इस समय विद्यमान हैं, सभी अपने जीवन में पुत्रों–पुत्रियों तथा पौत्रों–पौत्रियों से युक्त सुखी, समुन्नत और सम्पन्न जीवन का सुख भोग रहे हैं। श्री सत्यव्रत जी

और श्री देवराज जी, धर्मपरायण सुपुत्र तथा श्रीमती सन्तोष जी एवं श्रीमती विनोद जी (सुपुत्रियां) जम्मू में विद्यमान हैं जबकि श्री रमेशचन्द्र जी और श्री बन्सीलाल जी मिर्ज़ापुर (उत्तर प्रदेश) में निवास करते हैं। सभी धर्म धन के धनी बनकर आदर्श जीवन परम्पराओं से धन्य हैं।

हमें समस्त परिवार जनों को अत्यन्त निकट से देखने का अवसर मिला है। महाशय जी ने लगातार अनेक वर्षो तक अपने परिवार में (श्री सत्यव्रत जी एवं श्री देवराज जी के गृह पर जम्मू में) चारों वेदों के पारायण यज्ञ सम्पन्न किए। हम–आचार्य विद्यामानु शास्त्री–इन यज्ञों में ब्रह्मा एवं वैदिक प्रवक्ता के रूप में निरन्तर उपस्थित रहे हैं। महाशय जी के व्यक्तित्व का प्रभाव तथा आकर्षण था कि उन यज्ञों में प्रतिदिन भारी संख्या में श्रद्धालु महिलाएं और पुरुष उपस्थित रहते थे। श्री महाशय जी वार्तालाप कला के कुशल कलाकार थे, अपने इस गुण के कारण ही वे अपने समाज में सर्वप्रिय थे। शायद, उनकी सफलता का सबसे बड़ा कारण भी यही रहा।

समस्त परिवार जनों का आचरण और परस्पर व्यवहार कैसा हो, अथर्ववेद में इसका अत्यन्त रुचिकर, प्ररेणाप्रद और मनोहारी निर्देश दिया गया है। इसकी झांकी देखिए:–

1. "मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्,

मा स्वसारमुत स्वसा।

सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा,

वाचं वदत भद्रया।"

अर्थात्:– भाई भाई से द्वेष न करे और बहन बहन से द्वेष न करे, इस प्रकार नियमों का पालन करते हुए परस्पर कल्याणकारी वाणी का प्रयोग करें।

2. "अनुव्रतः पितुः पुत्रो

मात्रा भवतु संमनाः।

जाया पत्ये मधुमतीं

वाचं वदतु शन्तिवाम्।"

अर्थात्:– पुत्र पिता का अनुव्रती हो और माता के समान मन वाला हो। पति–पत्नी दोनों परस्पर मधुर और शान्ति–प्रद वाणी का प्रयोग करें।

3. "सहृदयं सांमनस्यम्,

अविद्वेषं कृणोमि वः।

अन्यो अन्यमभि हर्यत

वत्सं जातमिवाध्न्या।।"

अर्थात्:– सभी परिवार जनों के हृदय और मन एक समान हों और विद्वेष से रहित हों। सभी एक दूसरे से इस प्रकार प्रेम पूर्ण व्यवहार करने वाले हों जैसे गाय अपने तुरन्त उत्पन्न हुए बछड़े से प्यार करती है।

वेद के इन मन्त्रों को यहां उद्धृत करने का हमारा एकमात्र उद्देश्य यही है कि वेद के इन आदेशों को हमने चरितार्थ एवं फलीभूत होते हुए महाशय जी के परिवार में निकटता से अनुभव किया है। प्रशंसा करना ही हमारा उद्देश्य नहीं है।

श्री महाशय जी की स्मृति में उनके सुपुत्रों की यह श्रद्धांजलि पुस्तिका के रूप में आपके हाथों में प्रस्तुत है। श्रद्धांजलि की सार्थकता इसमें है कि सन्तति के शरीर में बहने वाली रक्तधारा की लालिमा बरकरार रहे क्योंकि उसके लिए ही वे अपने पूर्वजों के ऋणी होते है। पूर्वपुरूषों ने जो पवित्रता की ज्योति जगाई होती है वह जगमगाती रहे और यही प्रयास श्री महाशय जी का समस्त परिवार निरन्तर करता रहता है।

सभी परिवार जनों को हमारा साधुवाद और शुभाशीर्वाद।

मंगल कामनाओं के साथ
आचार्य विद्याभानु शास्त्री
जम्मू

परम पूज्य बाबू–जी श्रद्धेय महाशय तीर्थराम जी की स्मृति में–

"हिन्दु कहो न मुसलमान था

उस का जीवन पढ़ो, सच्चा इन्सान था।

भगत रामा के परिवार में,

मास्टर राम भेजा का पहला चिराग था।

जलकर भी रोशनी देता रहा,

उसी से ही उज्ज्वल सारा परिवार था।

तीर्थ यात्रा की कोई जरूरत नही,

वह स्वय ही तीर्थराम था

आर्यसमाज का वह सच्चा प्रहरी

जीवन उस का आर्य था।

कर्त्तव्य निष्ठा और कड़ी मेहनत,

वह सच्चाई का ही अवतार था।

रमेश चन्द्र गुप्ता

"श्री महाशय तीर्थराम जी : एक परिचय"

श्री महाशय तीर्थ राम जी सफल गृहस्थी होते हुए भी युग के परम तपस्वी, कर्मठ, योगी एवं वैदिक मिशन के कर्त्तव्य निष्ठ विचार–वान, नीतिवान, अचारशील पुरुष थे। गायत्री मां पर पूर्ण भरोसा था। गायत्री जप, वेद–यज्ञ अपने घर में प्रत्येक वर्ष करते थे। उनकी प्रेम–भरी वाणी बड़ी कोमल थी। अपने विचारों से प्रभावित करने की कला उन में ऐसी थी कि जो भी कुछ ही मिनटों के लिए उनके सर्म्पक में आता वह आजीवन उनका ही हो कर रह जाता।

आपका जन्म मीरपुर में श्री मास्टर रामभेजा जी के घर हुआ। आप अपनी माता की प्रथम सन्तान थे। अपने जीवन के रास्ते पर बेतहाशा भटकते हुए, केवल दुःख दर्द व क्लेश के कंकरों को बड़े धैर्य के साथ बीनते हुए, अपने हृदय मन्दिर में विराजमान अनन्त प्रभु की शान्त छटा को निहारते हुए अपने जीवन को वेद मार्ग पर चलाया।

आपका विवाह श्रीमती राजवन्ती जी के साथ हुआ। वह उच्च घराने की अपनी माता भाइयां देवी जी की प्रथम सन्तान थी। श्री अमरनाथ शाह, दीनानाथ शाह पुलवाले की बहिन थी। इनकी छोटी बहिन गोमती देवी जी थी। श्री महाशय जी गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर धन्य हो गये। सचमुच देवी ही गृहस्थ की नींव होती है। जिस गृहस्थ में देवी सुशिक्षित, विदुषी और अच्छे संस्कारों की, अच्छे घराने की हो

वही गृहस्थी सफल होती है। देवी ही वर के धर्म की रक्षक होती है। इनके विवाह के 12 वर्षो तक कोई सन्तान न हुई। मां देवी अपने देवर और ननदों का पालन पोषण अपने बच्चों की भान्ति करती रही। आप अनुमान लगा सकते हैं कि जिस औरत की सन्तान न हो उसकी ससुराल में अथवा इस हमारे बनाये समाज में कैसी दशा होती है। यह सब कुछ वह धैर्य के साथ सहती रही अपने पति के आगे कभी मुंह नही खोला।

हाँ, मैं यहाँ महाशय जी के जीवन की उस स्वर्णिम घटना को भी लिखना न भूलूंगी जिस से उनकी गृहस्थी आज फुलवाड़ी है उस में सुगन्धित फूल खिले हैं और महाशय जी के कुल की सुगन्ध युगों तक चलती रहेगी और उनके नाम के साथ जुड़ी रहेगी। वह घटना यूं हुई कि आप जिस समय गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के लिए दुलहे के रूप में जा रहे थे तो उस समय सामने से आती एक और बारात मिली जिस के दुलहे का नाम महाशय द्वारिका नाथ जी था। सामाजिक प्रथा के अनुसार दोनों बारातें मिलने पर दोनों को मित्रता करनी पड़ती थी। सो ऐसा ही हुआ। दैवयोग से दोनों परस्पर मित्र बन गये। मित्रता क्या सगे—भाइयों से बढ़ कर प्यार, समाज में एक उदाहरण बन गया। निःसन्देह दोनों ही इस संसार में नहीं है परन्तु दोनों के बच्चे भी चाचे—ताये के बच्चों की भान्ति परस्पर दुःख—सुख के आज भी भागीदार हैं।

हाँ! तो मैने ऊपर लिखा कि महाशय जी के विवाह के 12 वर्षों तक सन्तान नहीं हुई जिस कारण इन के माता–पिता दूसरा विवाह करने के लिए बाध्य कर रहे थे, किन्तु महाशय जी नहीं मान रहे थे। इधर महाशय द्वारिका नाथ जी ने इस में पूरा–पूरा सहयोग दिया और कहा कि इसी राजवन्ती की कोख से सन्तान होगी। सो किसी ने महाशय द्वारिका नाथ जी को बताया कि कुँआ खोदो तो कुएँ से जब पहला पानी निकले वह तुरन्त बाँझ औरत को पिलाया जाये तो वह सन्तान हीन नहीं रहती सो महाशय द्वारिका नाथ जी ईश्वर विश्वासी और मित्र थे। आर्यसमाज मीरपुर में कुँआ खोदा जा रहा थां वे वहाँ खड़े हो गये और जो पहला पानी निकला वह लाकर अपने मित्र की पत्नी श्रीमती राजवन्ती जी को पिलाया। प्रभु ने उनके प्रयत्न को साकार रूप दिया, महाशय तीर्थराम जी के घर पाँच बेटे और चार बेटियां हुई। ईश्वर विश्वासी की सहायता प्रभु अवश्य करता है जबकि प्रभु पर भरोसा किया जाये। यह घटना अच्छे मित्र की पहचान का एक बड़ा उदाहरण है।

12 वर्ष पश्चात् उनका धैर्य और प्रभु–विश्वास रंग लाया उनकी गृहस्थी में फूल खिले और गृहस्थी सुगन्धित हो गई। प्रथम सन्तान लड़की हुई, यह उनके धैर्य और सन्तोष का फल था, इसलिए उसका नाम सन्तोष रानी रखा गया।

उसके बाद माता जी ने पाँच बेटों को जन्म दिया। सबसे बड़े बेटे का नाम सत्यव्रत फिर देवराज, फिर रमेश चन्द्र, बंसी लाल, सुरेश चन्द्र रखा गया। मीरपुर नगर बड़ा सम्पन्न नगर था, जहाँ दूध, घी, अनाज की कमी नही थी। लोग घरों में सम्पन्न जीवन जी रहे थे।

1947 में जब मीरपुर पर कबालियों का हमला हुआ तो सभी मीरपुर वासियों को अपना घर छोड़ना पड़ा और पैदल जम्मू की ओर प्रस्थान किया गया। रास्ते कटे थे, संचार व्यवस्था कट चुकी थी, ग़लत रास्ते पर पड़ जाने के कारण मुसलमानों के घेरे में आ गये, उन्होंने सभी मीरपुर वासियों को अलीबेग कैम्प में बन्दी बना कर रखा। उस समय महाशय जी के साथ उनके पाँच बेटे और दो बेटियां थी। अलीबेग कैम्प में इन की छोटी छः माह की लड़की और छोटा बेटा सुरेश सर्दी, भूख और प्यास के कारण मृत्यु की गोद में सो गये। लगभग छः माह कैम्प में रहने के पश्चात् सभी मीरपुर वासियों को रेडक्रास सोसाइटी वालों ने वहाँ से निकाला और भारत के कुरुक्षेत्र कैम्प में लाकर रखा गया। दशा अच्छी नहीं थी इसलिए सरकार ने जूस वगैरह दिया। फिर चुनार कैम्प और कुछ लोगों को योल कैम्प में रखा गया। महाशय जी अपने बच्चों को चुनार कैम्प में ले गये, वहाँ सरकार राशन, कम्बल, कपड़े वगैरह देती थी परन्तु महाशय जी सरकारी

मदद के बदले में उनको अपनी पूर्ण सेवायें देते थे। कुछ समय के पश्चात् यू॰पी॰ स्टेट के मुख्यमन्त्री तथा जम्मू कश्मीर के मुख्यमन्त्री शेख अब्दुल्ला चुनार कैम्प का अवलोकन करने आये। वहां महाशय जी ने उनके समक्ष बड़ा सारगर्भित भाषण दिया। उनके भाषण के एक–एक शब्द को सुनकर मुख्यमन्त्री रो पड़े और तत्कालीन जिलाधिकारी को आदेश दिया कि ऐसे योग्य तथा जनहित में निःस्वार्थ सेवा करने वाले व्यक्ति को सरकारी सेवा में रख लिया जाये। अतः उन्हें सप्लाई इन्स्पैक्टर की नौकरी मिल गई। ये अपने मीरपुर के भाई बहिनों की सेवा में लग गये।

"जो बन्दा खुदी से जुदा हो गया।
खुदा की कसम वह खुदा हो गया।"

कुछ समय पश्चात् इनका स्थानान्तरण मिर्जापुर में हो गया। वह अपने बच्चो को कैम्प से निकाल कर मिर्जापुर ले गये और इस पद पर रह कर ईमानदारी से कार्य करने लगे। वह कहते थे:–

इस की परवाह मत करो चाहे ज़माना खिलाफ हो
रास्ता वही चलो, जो सीधा और साफ़ हो"।

मिर्जापुर में आकर इनकी छोटी बेटी विनोद बाला ने जन्म लिया जो कि इस समय जम्मू में अपने पति डॉ॰ राजेन्द्र जी के साथ में रह रही है। मिर्जापुर में अपने इस पद पर रहकर

अपनी कार्य शैली से सारे जनपद वासियों को इतना प्रभावित किया कि सभी उन्हें देवता स्वरूप समझने लगे। उन्हें अपने अच्छे कार्यों से "राज्यपाल पुरस्कार" भी मिला। बच्चों को पढ़ाई के अतिरिक्त दवाइयों का कारोबार करने के लिए प्रेरित किया। इन के बेटे पढ़ाई के बाद दवा के कारोबार में इनका सहयोग देने लगे। बच्चों को कहा कि "दवा व्यवसाय कर्म नहीं धर्म है, इसे जनहित स्वार्थ रहित बनाना हमारा कर्त्तव्य है।" सब बच्चे भी उनके पदचिन्हों पर चलने लगे।

"पुत्र हैं हम चारों तेरे, तू पिता परमात्मा
श्रेष्ठ मार्ग पर चलें और बन जायें धर्मात्मा।"

महाशय जी आर्यसमाज के सच्चे सेवक थे। रोज आर्यसमाज रिहाड़ी जाते थे कभी कभी अपने साथ महापुरूषों को ले जाते थे। उनका आदर सत्कार करते थे और कहते थे कि न जाने किस रूप में भगवान आ जावे। जब आर्यसमाज से होकर घर आते थे, जब खाने के लिए बैठते थे तो जो आर्यसमाज में प्रवचन होते थे उनका सार सबको सुनाते थे। मिर्जापुर आर्यसमाज़ को नव–जीवन प्रदान किया। मिर्जापुर के पास विंध्यवासिनी मां का मन्दिर है, वहाँ भी जाने लगे। आर्यसमाजी विचारों का व्यक्ति वहां बकरे की बलि लगते कैसे देख सकता था। वहां मां के दरबार में साथ में अष्टभुजा मन्दिर और काली मां का मन्दिर जहाँ पर बकरे की बलि बन्द करवाई। आज वहाँ बकरे की बलि नहीं लगती। अब महाशय जी ने अपने दफतर से (सेवा–निवृत्त) रिटायर होकर जम्मू की

ओर आने का विचार किया और अपने दो बेटों कों जम्मू में दवाइयों का कार्य खोलकर दिया जोकि आज गुप्ता मेडिकल एजेन्सी सत्यव्रत जी के नाम और महाजन मेडीकल एजेन्सी देवराज जी के नाम शालामार रोड़ पर चल रही है। दो बेटे मिर्जापुर में रमेश चन्द्र तथा बन्सी लाल दवाइयों का कार्य करते हैं और अपने पिता के पद चिन्हों पर चल कर उनका नाम अमर कर रहे हैं।

महाशय जी चार माह अपने बेटों के साथ मिर्जापुर में रहते थे। आर्यसमाजी विचारों के होने के कारण चारों वेदों का यज्ञ किया जो सन् 1975 से शुरु किया और 1987 तक किया। यज्ञ प्रत्येक वर्ष नवम्बर या दिसम्बर में और एक बार जून में प्लाट नं० 20 सरवाल कालोनी जम्मू में करते थे। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री विद्याभानु शास्त्री जी होते थे। सभी कालोनी वासी यज्ञ में भाग लेते थे। माता जी यानि इनकी धर्मपत्नी सनातनी विचारों की थी परन्तु कभी अपने विचार की बात न करके उनको यज्ञों में पूर्ण सहयोग देती थी। नित्यप्रति यज्ञ के पश्चात् यज्ञ पर आने वाले सभी लोगों को इनकी बहुएं सन्तोष गुप्ता, सुषमा गुप्ता अल्पाहार करवा कर भेजती थी। पूर्णाहुति वाले दिन तो लगभग सौ से भी ऊपर लोग होते थे, जिन्हें खिला कर ही भेजा जाता था यानि कि सारा परिवार ही इन को इन चारों वेदों का यज्ञ करने में सहयोग देता था।

हां! यह तो कोई महान् आत्मा थी जिन्हें कि अपने जीवन के अन्तिम दिनों में आभास हो गया था कि अब मेरी जीवन लीला समाप्त होने वाली है। इन की इच्छा थी कि गंगा तट हो और "ओम्" नाम की चादर ओढ़ा कर गंगा पार मेरा संस्कार हो। ऐसा मिर्जापुर में ही हो सकता था क्योंकि मिर्जापुर इन के बेटे रमेश चन्द्र का मकान गंगा किनारे पर था। सो इन्होंने जम्मू के बेटों को बिठा कर अपनी इच्छा बताई और मिर्जापुर जाने की तैयारी कर ली। बेटे कहने लगे हमारे पिता जी स्वस्थ है फिर भी यह बातें कैसी कर रहे हैं। हैरान तो थे ही परन्तु पिता जी की आज्ञानुसार माता जी, पिता जी के जाने का प्रबन्ध किया। जम्मू रहकर आपने अल्पकाल में बख्शीनगर आर्यसमाज की स्थापना में पूर्ण योगदान दिया और कई वर्षो तक इस समाज के अध्यक्ष रहे। आर्यसमाज कोटली कालोनी से आप का काफी सम्पर्क रहा और जम्मू के लगभग सभी आर्य समाजों से आप का सम्पर्क रहा । सभी आर्यसमाजों ने आप को विशिष्ट सम्मेलनों में आर्यजनों ने आप को सम्मानित कर अपने आप को गौरवान्वित अनुभव किया।

आर्यसमाज गढ़ी में भी आपने एक कमरा आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित बनवाया।

"चलके पथिक शुभकर्म कमा ले
इस अवसर का भरपूर लाभ उठाले"

जम्मू के सभी आर्यसमाजों के नाम एक धनराशि स्थायी योजना के रूप में जमा करा दी ताकि उससे अर्जित ब्याज से युगों युगों तक यज्ञशाला में आहुति दी जा सके।

"सागर से बुझ नहीं सकती कभी किसी की प्यास,
कभी एक बूंद ही कर देती है मन की पूर्ण आस"।

मिर्जापुर पहुँच कर वह पहले अपने छोटे बेटे बंसीलाल के घर गये और कुछ दिन वहां रहकर अपने तीसरे बेटे रमेश चन्द के घर आये जिनका निवास स्थल "तीर्थ–निकेतन" गंगा तट पर स्थित है। एक दिन नाश्ते के पश्चात् अपनी बहुरानी प्रमिला रानी से कहने लगे, बेटी मेरे हृदय में तुम्हारी बड़ी इज्जत है और मैं तुम्हें अपनी बेटी ही मानता हूँ अपने दिल की बात कहना चाहता हूँ "मेरी इच्छा है मेरी मृत्यु इसी घर में हो और मेरे शरीर पर "ओ३म् का झंड़ा" लपेट कर वैदिक रीति से दाह संस्कार गंगा के किनारे पर किया जाये और किसी भी सम्बन्धी को रोने न दिया जाये"। बहू प्रमिला बड़े आश्चर्य में थी कि बाबूजी स्वस्थ हैं फिर यह सब क्यों कह रहे हैं । महाशय जी ने कहा बेटी, तुम सोच में डूब गयी, देखो शरीर नश्वर है हम पके फल हैं कभी भी डाली से टूट

सकते है तुम सदैव मेरा कहना मानती हो और यह भी मान लेना, यह मेरी अन्तिम इच्छा है । बहू का उत्तर था – जैसी आप की आज्ञा। कुछ दिन बीत गये काल चक्र अपनी परिधि में घूमने लगा। सुबह उठे, गंगा स्नान करके आये और सन्ध्या पाठ किया, और नाश्ते के टेबल पर बैठे और प्रतिदिन की भांति सब को कुछ उपदेश दे रहे थे तो वहीं लुढ़क गये, प्रभु की लीला न्यारी है। डाक्टर बुलाये गये डाक्टर ने उन्हें कहा – आप बिल्कुल ठीक हैं परन्तु पूज्य महाशय जी ने अपने बेटे रमेश चन्द से कहा मुझे मृत्यु का आभास हो रहा है। अतः उसने उनके सभी सम्बंधियों को सूचना दे दी । सभी के दर्शन के पश्चात् उन्होंने 7 दिसम्बर 1989 को रात्रि 12 बजकर 5 मिनट पर अपने प्राण त्याग दिये परन्तु कुछ क्षणों के बाद आँखें खोलीं और सभी को चारों ओर देखा और सदैव के लिये गहरी निद्रा में चले गये। बहू प्रमिला ने बड़ा धैर्य रखते हुए सब से प्रार्थना की कि कोई रुदन नहीं करेगा, बाबू जी की आत्मा को शान्ति मिलेगी। आज्ञानुसार आप का अन्तिम सस्कार किया गया । हंस तो जहां जायेंगे वहां की शोभा को बढ़ायेंगे परन्तु हानि तो उन सरोवरों की होती है जिन्हें वे सूना कर जाते हैं।

"हर तरफ तुम्हीं हो हमारे हर तरफ तेरा उजियारा,
रोम–रोम में रम रहा हर रंग रूप तुम्हारा।"

एक समय की बात है कि राशनिंग विभाग के इन्स्पैकटर पद पर रह कर आपको गांव में जाकर राशन की दूकानों का निरीक्षण करना पड़ता था, सो वहां क्या देखा कि एक दूकानदार राशन कम तोल कर दे रहा था। आपको इस बात पर बड़ा क्रोध आ गया, आप ने छड़ी उठा कर उसको तीन चार लगाई और कहा कि "कम तोल कर राशन लोगों को देते हो"। प्रभु के दरबार में जा कर क्या जवाब दोगे, इतना कहने पर एक दम से आपकी आत्मा कांपी कि मैं अकेला, इलाका गुण्डों का, एक दम से मुझे खत्म कर देगें, तो परदेस में मेरे बच्चों का क्या होगा। यह विचार मन में आते ही, दूसरे क्षण ही हृदय मन्दिर में विराजमान प्रभु की छटा ने ऐसी शक्ति दी कि शाबाश! तूं ने कोई गल्त काम नहीं किया, अपने पथ से गिरना नहीं, डटे रहो। आत्मा की इस आवाज से उन्हें बल मिला, शक्ति से कार्य कर के घर आ गये। उसे छड़ी की मार दी, क़लम की नहीं। अगर क़लम की मार दी होती तो उसका परिवार भूखा मरता। व्यक्ति को मार दी, परिवार को नहीं। दूसरे दिन वह दूकानदार आ कर आपके पैरों पर गिर पड़ा "चाचा जी, आपने मुझे बचा लिया"। फिर जब तक वह रहा सदैव आपको मान–सम्मान की दृष्टि से देखता रहा।

अथ ईश्वर–स्तुति–प्रार्थना–
उपासना मन्त्राः

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव।।1।। (यजुः 30–3)

अर्थ– हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्य युक्त शुद्ध, स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए। जो कल्याण कारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वे सब हम को प्राप्त कराइये।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे, भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।2।। (यजुः 13–4)

अर्थ– जो स्व–प्रकाश स्वरूप और जिस ने प्रकाश करने हारे सूर्य–चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतन स्वरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्त्तमान था, वह इस भूमि और सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुख स्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायाऽमृतं यस्य मृत्युः, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।3।। (यजुः 25–13)

अर्थ— जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर आत्मा और समाज के बल का देने हारा, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्य स्वरूप शासन न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष सुखदायक है, जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप, सकल ज्ञान के देने हारे परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा पालन करने में तत्पर रहें।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशेऽस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।4।। (यजु॰ 23–3)

अर्थ— जो प्राण वाले और अप्राणि रूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही विराजमान राजा है, जो इस मनुष्यादि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है। हम लोग उस सुखस्वरूप, सकलैश्वर्य के देने हारे परमात्मा की उपासना अर्थात् अपनी सकल उत्तम सामग्री को उस की आज्ञा पालन में समर्पित करके विशेष भक्ति करें।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा, येन स्व स्तभितं येन नाकः। योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।5।। (यजु॰ 32–6)

अर्थ— जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण

किया और जिस ईश्वर ने दुःख रहित मोक्ष को धारण किया है जो आकाश में सब लोक लोकान्तरों को विशेष मानयुक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं वैसे सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्।।6।। (ऋ० 10–121–12)

अर्थ– हे सब प्रजा के स्वामी परमात्मा ! आप से भिन्न दूसरा कोई उन इन सब उत्पन्न हुए जड़ चेतनादिकों को नहीं तिरस्कार करता है अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस जिस पदार्थ की कामना वाले होके हम लोग भक्ति करें, आप का आश्रय लेवें और वाञ्छा करें, उस उस की कामन ा हमारी सिद्ध होवे, जिस से हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें।

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृत–मानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त।।7।। (यजु. अ. 32–10)

अर्थ– हे मनुष्यो! वह परमात्मा अपने लोगों का भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक, वह सब कामों का पूर्ण करने हारा, सम्पूर्ण लोकमात्र और नाम, स्थान, जन्मों

को जानता है और जिस सांसारिक सुख दुःख से रहित नित्य आनन्द युक्त मोक्ष स्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में मोक्ष को प्राप्त हो के विद्वान् लोग स्वेच्छा पूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है, अपने लोग मिल के सदा उसकी भक्ति किया करें।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम।।8।।

अर्थ– हे स्वप्रकाश, ज्ञानस्वरूप, सब जगत् के प्रकाश करने हारे सकल सुखदाता परमेश्वर! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान वा राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से संपूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइये और हम से कुटिलता युक्त पापरूप कर्म को दूर कीजिए, इस कारण हम लोग आप की बहुत प्रकार की स्तुतिरूप नम्रता पूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द में रहें।

इति ईश्वर–स्तुति–प्रार्थनोपासना प्रकरणम्

———————0———————

सामान्य यज्ञ प्रकरणम्

आचमन–मंत्र

अग्नि होत्र से पूर्व निम्न तीन मन्त्रों से तीन आचमन करें:–

ओ३म् अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।।1।।

इस से एक

ओ३म् अमृतापिधानमसि स्वाहा।।2।।

इस से दूसरा

ओ३म् सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा।।3।।

इस से तीसरा

भावार्थ– हे सर्वरक्षक, अमृत स्वरूप प्रभो। आप हमारे बिछौने तथा ओढ़ने के समान हैं अर्थात् आप हमारी अन्दर बाहिर सब ओर से रक्षा करते हैं। सच्चाई से प्राप्त किया हुआ यश तथा धन ही सदा हमारे पास रहे।

अंगस्पर्श मंत्र

बायें हाथ की हथेली पर जल डाल कर दाहने हाथ की मध्य की दो उंगलियों से जल स्पर्श करके प्रथम दायें फिर बायें भाग का निम्न मन्त्रों से अर्थ विचार पूर्वक इन अंगों के दोषों को दूर करने के लिए प्रभु से प्रार्थना करते हुए स्पर्श करें:–

ओ३म् वाड्-म आस्येऽस्तु।। इस से मुख।

ओ३म् नसोर्मे प्राणोऽस्तु।। इस से नासिका के दोनों छिद्र।

ओ३म् अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु।। इस से दोनों आंखें।

ओ३म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु।। इस से दोनों कान।

ओ३म् बाह्वोर्मे बलमस्तु।। इस से दोनों भुजायें।

ओ३म् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु।। इस से दोनों जंघायें।

ओ३म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु।। इससे शरीर के सभी अंगों का

भावार्थ– हे सर्वरक्षक प्रभो! आपकी कृपा से मेरे मुँह में वाक् शक्ति, नासिका में प्राण शक्ति, आंखों में दर्शन शक्ति, कानों में श्रवण शक्ति, भुजाओं में बल और जंघाओं में वेग पराक्रम शक्ति यावत् जीवन विद्यमान रहे। मेरे शरीर के सब अंग रोगों तथा दोषों से रहित रहें।

अग्नि आधान मन्त्र

नीचे लिखे मंत्र से दीपक की लौ या दीयासलाई से कपूर को या घी में डुबाई रुई की बत्ती को लगा कर हवन कुण्ड की समिधाओं में रखें:–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि, पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे।

भावार्थ:– हे सबके उत्पादक, प्राणस्वरूप, दुखनाशक, सुख स्वरूप प्रभो! आपके आदेशानुसार मैं महत्ता में द्युलोक के समान, श्रेष्ठता में पृथिवी लोक के समान जो यह विस्तीर्ण यज्ञवेदि है, उसकी पीठ पर अर्थात् यज्ञ कुण्ड में हविरूप पदार्थों को भक्षण करके सूक्ष्म रूप में फैलाने के लिए हवियों का भक्षण करने वाले अग्नि को स्थापित करता हूँ।

अग्नि प्रदीप्त करने का मंत्र

ओ३म् उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि, त्वमिष्टापूर्त्ते संसृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

भावार्थ– हे प्रभो! यह यज्ञाग्नि प्रदीप्त हो और यजमान तथा यज्ञाग्नि दोनों पारस्परिक सहयोग से नाना प्रकार के कार्यों को यज्ञ की भावना से करते रहें। जिन 'इष्ट' कार्यों को ये करना चाहते हैं या जिन्हें 'आपूर्त्त' अर्थात् पूरा कर चुके हैं, ऐसे नये–नये कार्यों का ये सृजन कर उन्हें यज्ञ भावना से पूरा करें।

समिधा आधान के मन्त्र

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्म–वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।।

इदमग्नये जातवेदसे–इदं न मम।

इस मन्त्र से एक समिधा अग्नि के अर्पण करें।

भावार्थ–हे प्रभो! जैसे आपके द्वारा उत्पादित यह भौतिक अग्नि समिधा को पा कर बढ़ता है, वैसे ही आपके प्रदत्त भोग्य पदार्थों को यथोचित रूप से सेवन करके हम भी सन्तान, पशु, धन–धान्य, तेज, यश आदि से बढ़ते रहें। यह हमारी वृद्धि अपने स्वार्थ के लिए ही न होकर लोक कल्याण के लिए हो।

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोध्यतातिथिम्।
आस्मिन् हव्या जुहोतन।
ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे, घृतं तीव्रं जुहोतन।
अग्नये जातवेदसे स्वाहा।
इदमग्नये जातवेदसे–इदं न मम।।

भावार्थ– (प्रथम मन्त्र)– समिधा और घृत के द्वारा अग्नि प्रज्वलित होता है, इसलिए हम घृत युक्त समिधा से यज्ञीय अतिथि रूप अग्नि को प्रकाशित करते हैं।

दूसरा मन्त्र–अच्छी प्रकार प्रदीप्त एवं ज्वाला युक्त अग्नि के लिए उत्कृष्ट घी का होम करता हूँ।

यह होम जातवेदा अग्नि के लिए है, मेरा नहीं है अर्थात् यज्ञीय पदार्थ प्रभु के दिये ही हैं।

ओ३म् तंत्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धयामसि।
बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा।।
इदमग्नये अंगिरसे–इदं न मम।।

भावार्थ– वस्तु मात्र में व्यापत होने वाले और पदार्थों को

पृथक–पृथक् दर्शाने वाले अग्नि को समिधाओं सें बढ़ाता हूँ। यह आहुति अंगिरा अग्नि के लिए है, मेरी नहीं है।

पांच घृत आहुति मन्त्र

नीचे लिखे मंत्र से घी की पांच आहुतियां देवें:–

ओ३म् अयं त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा।।

इदमग्ने जातवेदसे–इदं न मम।

जल सिंचन मंत्र

निम्न लिखित मंत्रों से अग्नि कुण्ड के चारों ओर क्रमशः पूर्व पश्चिम, उत्तर और दक्षिण दिशा में हाथ की अंजलि में जल ले कर सिंचन करें:–

ओ३म् अदितेऽनुमन्यस्व।। इस से पूर्व

ओ३म् अनुमतेऽनुमन्यस्व।। इससे पश्चिम

ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व।। इससे उत्तर और

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु।।

इस मन्त्र से ईशान कोण से लेकर चारों ओर जल सींचें।

भावार्थ– यह कुण्ड के चारों और सिंचन किया हुआ जल अग्नि की रक्षा करता है। जल यज्ञ का प्रेरक है, यज्ञपति को ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रेरणा देता है। यह शरीर का शोधक है और वाणी में मधुरता उत्पन्न करने वाला है।

आधार आहुति

निम्न मंत्रों से कुण्ड के निर्दिष्ट भाग में घी की आहुतियां दें:–

ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये–इदं न मम।।

इस से उत्तर भाग में।

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय–इदं न मम।।

इस से दक्षिण भाग में।

आज्यभाग आहुति

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये–इदं न मम।

इससे मध्य भाग में।

ओ३म् इन्द्राय स्वाहा।। इदमिन्द्राय इदं न मम।

इससे मध्य भाग में ।

भावार्थ– मैं यज्ञीय द्रव्य घृत से उत्तर और दक्षिण दिशा के अग्नि और सोम देवों के लिए तथा केन्द्र के प्रजापति और इन्द्र देवों के लिए आहुतियां देता हूँ।

अग्निहोत्र की प्रधान आहुतियाँ

प्रातःकालीन आहुतियों के मन्त्र

नीचे लिखे मन्त्रों से घी तथा सामग्री की आहुतियाँ देवें:–

ओ३म् सूर्य्यो ज्योति ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।।1।।

ओ३म् सूर्य्यो वर्च्चो ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा।।2।।

ओ३म् ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।3।।

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाणः सूर्य्यो वेतु स्वाहा।।4।।

भावार्थ– संसार में सूर्य ही प्रकाश और क्रांति का हेतु है। उसके बिना स्थावर वृक्षादि एवं जंगम प्राणियों के शरीर क्रांति

रहित हो जाते है। वही सूर्य सबका प्रेरक और निद्रा वा अन्धकार को नाश करने की शक्ति से युक्त है। हम उस सूर्य देव से प्रेरणा प्राप्त करके आत्म प्रकाश वा आत्म प्रेरणा के लिए ये आहुतियां देते हैं। इस से हम स्वयं सूर्य समान आत्मप्रकाश एवं प्रेरक बन कर मानव मात्र के प्रकाशक एवं प्रेरक बनें।

सायं कालीन आहुतियों के मन्त्र

(यदि दोनों समय का अग्नि होत्र एक ही समय करना हो तो प्रातः काल की आहुतियों के बाद ही सायंकालीन आहुतियां दे देनी चाहियें।)

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।1।।

ओ३म् अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।2।।

ओ३म् अग्निर्ज्योति र्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।3।।

(तीसरे मंत्र को मन में उच्चारण करें)

ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।।4।।

भावार्थ–रात्रि में अग्नि ही प्रकाश और क्रांति का हेतु होता है। इसके बिना प्राणी अपने व्यवहारों में असमर्थ हो जाता है। हम उस अग्नि देव से प्रेरणा प्राप्त करके आत्म प्रकाश एवं आत्म प्रेरणा के लिए ये आहुतियां देते हैं। इन से हम स्वयं अग्नि के समान स्वयं प्रकाशक एवं प्रेरक बन कर मानव मात्र के प्रकाशक प्रेरक एवं नेता बनें।

दोनों समय की सामान्य आहुतियां

ओ३म् भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।। इदमग्नये प्राणाय–इदं न मम।।1।।

ओ३म् भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय–इदं न मम।।2।।

ओ३म् स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय–इदं न मम।।3।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।

इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः–इदं न मम।।4।।

भावार्थ–मैं यह आहुति पृथिवी–स्थानीय प्राण रूप अग्नि के लिए अन्तरिक्ष–स्थानीय अपान रूप वायु के लिए, द्यु–स्थानीय सुख रूप सूर्य के लिए एवं तीनों स्थानों के अग्नि, वायु, सूर्य तीनों सम्मिलित देवों के लिए देता हूँ।

समर्पण मंत्र

ओ३म् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

भावार्थ– हे प्रभो आप सर्वव्यापक, सब से स्नेह रखने वाले, हमारे रक्षक हो। ये सब भोग पदार्थ आप के दिये हुए हैं। मैं आप के दिये घृत आदि पदार्थ इस यज्ञ कर्म द्वारा आप को समर्पित करता हूँ। आप ही हमारे जीवन आधार हैं। यह जीवन जो आपकी दया से यज्ञीय बन गया है आप को ही समर्पित है।

प्रार्थना मंत्र

ओ३म् यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते।

तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।।

भावार्थ—हे प्रकाश स्वरूप प्रभो! दिव्य गुणों वाले श्रेष्ठ जन और ज्ञान द्वारा रक्षक पितर जिस मेधा बुद्धि की याचना करते हैं, उसी मेधा (श्रेष्ठ बुद्धि) से आज मुझे भी युक्त कीजिए। इसी के लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।

ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽस्मान्, विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो, भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

इन मंत्रों का अर्थ स्तुति परार्थनोपासना में आ चुका है।

व्याहृति आहुतियां

ओ३म् भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये—इदं न मम।।
ओ३म् भुवर्वायवे स्वाहा।। इदं वायवे—इदं न मम।।
ओ३म् स्वरादित्याय स्वाहा।। इदमादित्याय—इदं न मम।
ओ३म् भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।
इदमग्निवाय्वादित्यभ्यः—इदं न मम।।

भावार्थ— मैं ये आहुतियां क्रमशः पृथिवी स्थानीय अग्नि के लिए, अन्तरिक्ष स्थानीय वायु, द्युस्थानीय सूर्य के लिए पृथक्–पृथक्, एवं तीनों स्थानों के अग्नि वायु आदित्य देवों के लिए सम्मिलित रूप से देता हूँ।

स्विष्टकृत् आहुति मंत्र

यह आहुति घृत की या भात की देनी चाहिये।

ओ३म् यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्व स्विष्टं सुहुतं करोतु मे अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां

कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा।। इदग्नये स्विष्टकृते–इदं न मम।।

भावार्थ–हे वरणीय श्रेष्ठतम प्रभो! आपकी अपने किये जाने वाले इस यज्ञ में मैंने अपने अज्ञान से जो अप्रासंगिक कर्म अधिक किया है, अथवा जो छोड़ दिया है, उस अधिकता वा न्यूनता को आप भली भांति जानते हैं। इसलिए मेरी अल्पज्ञता को ध्यान में रखते हुए उसे ही यथोचित रूप से किया हुआ कर्म मानें और उसे पूर्ण बनावें इसीलिए मैं सर्वज्ञ, सब कर्मों को पूर्ण करने वाले, यथाशक्ति अच्छे प्रकार भजन किए हुए और प्रायश्चित्त आहुति द्वारा सर्वकामनाओं को पूर्ण करने वाले आपके लिए ही यह आहुति देता हूँ। हे प्रभो! आप हमारी सब कामनाओं को पूर्ण करें।

प्राजापत्याहुति मंत्र

इस मंत्र में 'प्रजापतये' शब्द मन में ही उच्चारण करें।

ओ३म् (प्रजापतये) स्वाहा।। इदं प्रजापतये–इदं न मम।

भावार्थ–यज्ञ का प्रधान उद्देश्य आत्म शुद्धि है। अतः यज्ञ कर्म के अन्त में आत्म शुद्धि की भावना से किये गए कर्म उसी प्रभु के लिए समपर्ण कर देने चाहिएं।

12 आज्याहुति मंत्र

ये सब आहुतियां घी से देवें:–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवनामाय–इदं न मम।।1।।

भावार्थ– हे सत् चित्–आनन्द स्वरूप प्रभो! हमारा जीवन

पवित्र हो, आयु दीर्घ हो, हमें शारीरिक तथा मानसिक बल प्राप्त हों, संसार के सभी भोग्य पदार्थ हमें प्राप्त हों, हमारे जीवन में आने वाली सभी बाधायें दूर हों।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा।। इदमग्नये पवमानाय–इदं न मम।।2।।

भावार्थ–हे सब के प्रकाशक, ज्ञानदाता, पवित्र कर्त्ता प्रभो! आप सृष्टि की रचना से पूर्व से वर्तमान हो। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और म्लेच्छ अर्थात् मनुष्य मात्र के हितैषी हो। हम महती स्तुति योग्य आप की शरण को प्राप्त होते हैं। आप हमारी रक्षा करो। इसी भावना से मैं यह आहुति देता हूं।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय, इदन्न मम।।3।।

भावार्थ– हे प्रकाश स्वरूप प्रभो! आप हमारी उत्तम आचरणों वाली प्रजाओं को पवित्र करो। हम लोगों में तेज पराक्रम विविध प्रकार के ऐश्वर्य और पुष्टि को धारण कराओ अर्थात् आपकी कृपा से हमें पवित्रता तथा तेज आदि गुण प्राप्त होवें। इसके लिए मैं यह आहुति देता हूँ।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो, विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु, वयं स्याम पतयो रयीणां स्वाहा।। इदं प्रजापतये–इदं न मम।।4।।

भावार्थ–हे सकल जगत् के स्वामिन्! आप से भिन्न कोई

भी इन लोक लोकान्तरों को रचने में समर्थ नहीं है। आप ने ही इस सारे ब्रह्माण्ड को रचा है। हम जिस–जिस कामना वाले, पूर्ण पुरुषार्थ के अनन्तर, आप को आत्म–समर्पण करते हैं, हमारी वे सब कामनाएं आप की कृपा से पूर्ण होवें। हम सब प्रकार के ऐश्वर्यों के स्वामी होवें। इसी कामना को लेकर हम इस आहुति को देते हुए आत्म समर्पण करते हैं।

प्रायः आर्य समाजों में सामग्री की आहुतियाँ इस मंत्र से आरंभ कर दी जाती हैं।

ओ३म् त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्, देवस्य हेडोऽवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो, विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदं न मम।।5।।

भावार्थ–हे प्रभो! देश का जो संविधान हो, राज्य व्यवस्था हो, उस का मैं अनादर कर राज्य शक्ति के कोप का भाजन न बनूं। मुझे ऐसी मति दो जिस से मैं संविधान का आदर करूँ और यज्ञ करने वालो में श्रेष्ठतम होऊं। मेरे हृदय में किसी के प्रति द्वेष भावना न हो–इसी नम्र भावना को ले कर ये उद्गार प्रकट कर रहा हूँ। यह अग्नि तथा हवि वरुण के लिए समर्पित है, इसमें मेरा कोई अधिकार नहीं।

ओ३म् स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती, नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो, वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां इदं न मम।।6।।

भावार्थ– हे प्रकाश स्वरूप प्रभो! आप हमारे रक्षक हूजिए। इस

उषाकाल की प्रथम किरणों के फूटते ही हम आपके समीपतम हो कर आपकी रक्षा के हाथ की याचना करते हैं। हम चारों तरफ से दुखों द्वारा ऐसे घिरे हुए हैं जैसे कोई घटाटोप अन्धकार में पड़ा हो। आप अपनी करुणामय दृष्टि से इन दुखों को दूर करो। आपका द्वार सब के लिए एक समान खुला है—इसलिए हम आप को पुकार रहे हैं। हमारा सब कुछ आप के चरणों की भेंट है। हमारा कुछ नहीं, सब आपका है।

ओ३म् इमं मे वरुण श्रुधी, हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा।। इदं वरुणाय—इदं न मम।।7।।

भावार्थ—हे सब पर समान कृपा करने वाले प्रभो! मैं दीन दुखिया अपनी पुकार लेकर आपके चरणों में आया हूँ। आप सब की पुकार सुनते हो, मेरी भी सुनो और मेरा दुःख दूर करो। मैं आपकी रक्षा के हाथ के नीचे खड़ा आपकी कृपा दृष्टि के लिए आपकी तरफ निहार रहा हूँ। प्रभो! मेरा कुछ भी नहीं है, जो कुछ मैं अपना समझता था वह सब आपका है और आपके चरणों में सब समर्पित है।

ओ३म् तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्र मोषीः स्वाहा।। इदं वरुणाय—इदं न मम।।8।।

भावार्थ—हे वरुण देव! मैं यज्ञ द्वारा आपकी स्तुति करता हुआ आपकी शरण में आ रहा हूँ। मैं यज्ञ में जो आहुतियां डाल रहा हूँ वे इस बात का प्रतीक है कि मैं अब तक जो कुछ अपना

समझे हुए था उसे आप की भेंट करता जा रहा हूँ। मैं अपने ''मैं–पन'' को आहुति के रूप में यज्ञ की अग्नि में 'भस्म' कर आपके पास इस आशा से आ रहा हूँ कि आप मुझे अपना कर अपना बना लोगे। हे भगवन्! आप की कीर्ति दिग्दिगंत में व्याप रही है। मैं अपना जीवन आपके अर्पित कर रहा हूँ जिससे मुझे मृत्यु का भय न रहे।

ओ३म् ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं, यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरूद्भ्यः स्वर्क्केभ्यः–इदं न मम।।9।।

भावार्थ–हे प्रभो! आप के संसार में सैंकड़ों और हज़ारों नियम हैं जिनके पाश में मनुष्य बन्धा हुआ है। हमारे गुरुजन जो शुभ कर्मों की प्रेरणा देने वाले हैं, न्याय शास्त्र को जानने वाले शास्त्रवेत्तौ – जो क्या ठीक है क्या गलत है–इसका निर्णय करते हैं, हमारे मित्रगण जो विपत्ति के समय हमें ढारस बंधाते हैं, तपस्वी लोग जो तपस्या का जीवन व्यतीत करते हैं ये सब हमें कर्म के बन्धन से छुड़ा कर भवसागर को पार करने में सहायता करें।

ओ३म् अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि। अया नो यज्ञं वहास्यया, नो धेहि भेषजं स्वाहा। इदमग्नये अयसे–इदं न मम।।10।।

भावार्थ–हे प्रभो! आपकी गति सब जगह है। आप हमारे हृदय के भावों को भी जानते हैं। हमारे भीतर अनेक अप्रशंसनीय, कुत्सित, निन्दित विचार आते हैं। भगवन्! यह सत्य है कि

आप हमारी इन कुत्सित, गर्हित, निन्दनीय विचारों से रक्षा कर सकते हैं। अपनी उस ओषधि का चमत्कार दिखलाओ जिससे हमारे विचार पवित्र रहें और हम निन्दनीय विचारों के जाल में न फंसें।

ओ३म् उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायादित्यायादितये च—इदं न मम।।11।।

भावार्थ— हे प्रभो! हमारे उत्तम मध्यम और साधारण कोटि के जो पाप रूपी भव—बन्धन हैं आप अपनी कृपा से उन्हें शिथिल कर दो तथा उनसे हमें मुक्त करो। हे अविनाशी प्रभो! हम बन्धनों से मुक्त होकर, शुद्ध होकर नित्य अविनाशी मोक्ष के लिए समर्थ होवें अर्थात् मोक्ष के अधिकारी बनें।

ओ३म् भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं हिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा। इदं जातवेदोभ्याम्—इदं न मम।।12।।

भावार्थ—हे प्रभो! आपकी कृपा से ज्ञानी वानप्रस्थी और संन्यासी हमारे लिए समान मन वाले, समान ज्ञान वाले, पाप वृत्तिरहित शुद्ध होवें। वे अपेक्षा करके हमारे शुभ कर्मों वा शुभ कर्म करने वाले मुझ को नष्ट करने वाले न होवें अर्थात् वे मुझे सदा मार्ग दर्शन कराते रहें। वे अपने उपदेशों से हमारे लिए सदा सुखकारी हों। इसी भावना से मैं यह आहुतियां देता हूँ।

तत्पश्चात् निम्न गायत्री मन्त्र से तीन आहुतियां देवें:–

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुवर्रेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

(इसका अर्थ सन्ध्योपासना में देखें)

पूर्णाहुति मंत्र

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं स्वाहा।।

इस मंत्र को तीन बार उच्चारण करके सारा घृत वा सामग्री अग्नि (यज्ञ कुण्ड) में डाल दें।

भावार्थ–हे प्रभो! जो प्रार्थनायें हमने भिन्न–भिन्न मन्त्रों द्वारा इस यज्ञ में की है, वे सच्चे हृदय से की है, वे सच्चे हृदय की पुकार है। हे भगवन्! हमारी पुकार सुनो, सुनो, सुनो।

इति यज्ञविधिः समाप्तः।

बलिवैश्वदेव यज्ञ विधि

घी–शक्कर अथवा किसी और प्रकार के मीठे आदि शाकल्य के साथ आहुतियां दें।

ओ३म् अग्नये स्वाहा।।1।।

ओ३म् सोमाय स्वाहा।।2।।

ओ३म् अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा।।3।।

ओ३म् विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।।4।।

ओ३म् धन्वन्तरये स्वाहा।।5।।

ओ३म् कुह्वै स्वाहा।।6।।

ओ३म् अनुमत्यै स्वाहा।।7।।

ओ३म् प्रजापतये स्वाहा।।8।।

ओ३म् सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा।।9।।

ओ३म् स्विष्टकृते स्वाहा।।10।।

यज्ञ प्रार्थना

यज्ञरूप प्रभो! हमारे भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड़ देवें छल–कपट को, मानसिक बल दीजिए।।
वेद की बोलें ऋचायें, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे, शोकसागर से तरें।।
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर–उपकार को।
धर्म–मर्यादा चला कर लाभ दें संसार को।
नित्य श्रद्धा–भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग–पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें।
भावना मिट जाए मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होवें यज्ञ से नर नार की।।
लाभकारी हों हवन हर जीवधारी के लिए।
वायुजल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किए।।
स्वार्थ–भाव मिटे हमारा प्रेम–पथ विस्तार हो।
'इदन्न–मम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।
हाथ जोड़ झुकायें मस्तक, वन्दना हम कर रहे।
नाथ करुणारूप करुणा आप की सब पर रहे।

मंगल कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

सबका भला करो भगवान, सब पर दया करो दयावान्।
सब पर कृपा करो भगवान्,

सबका सब विधि हो कल्याण।।
हे ईश! सब सुखी हों, कोई न हो दुखारी।
सब हों नीरोग भगवन्, धन–धान्य के भण्डारी।।
सब भद्रभाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

शान्ति पाठ

ओम् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः
सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।
ओम् शान्तिः शान्तिः शान्ति।

भजन

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी, भगवन्! पूरी होय।।
विद्या बुद्धि, तेज बल सबके भीतर होय।
दूध पूत धन–धान्य से, वंचित रहे न कोय।।
आप की भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग–द्वेष से चित्त मेरा, भागे कोसों दूर।।
मिले भरोसा नाम का, हमें सदा जगदीश।
आशा तेरे धाम की, बनी रहे मम ईश।।
हमें बचाओं पाप से, करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय कर, हम को करो निहाल।।

दिल में दया उदारता, मन में प्रेम अपार।
हृदय में धैर्य वीरता, सबको दो करतार।।
नारायण तुम आप हो, पाप के मोचन हार।
दूर करो दुर्गुण सभी कर दो भव से पार।।
हाथ जोड़ विनती करूं, सुनिए कृपा निधान।
साधु-संगत सुख दीजिए, दया नम्रता दान।।

शान्ति-गीत

1. शान्ति कीजिए प्रभु त्रिभुवन में।
जल में, थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में अग्नि पवन में
औषध वनस्पति वन उपवन में,
सकल विश्व में जड़-चेतन में।।
और प्रकृति के हो कण-कण में।
शान्ति कीजिए ....

2. ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में,
वैश्य जनों के होवे धन में,
और शूद्र के हो चरणन में।
शान्ति कीजिए ....

3. शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में,
नगर ग्राम में और भवन में,
जीव मात्र के तन में मन में,
और जगत् के हो कण कण में।

शान्ति कीजिए ....

यज्ञ का महत्त्व

प्राचीनकाल से ही ऋषियों ने यज्ञ को विशेष महत्त्व दिया है। ऋषियों ने अनुसंधान या तपस्या करके यज्ञ को सार्वभौम विशेष धर्म, तप, दीक्षा और व्रत के रूप में स्वीकार किया है। यज्ञ पांच प्रकार के होते हैं। ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, बलिवैश्वदेव यज्ञ और अतिथि यज्ञ। अग्निहोत्र विधि ही देव यज्ञ कहलाता है। इस विधि का उपयोग पुत्रेष्टि, वर्षेष्टि, अश्वमेध इत्यादि सभी विधियों में किया जाता है। सोलह संस्कारों में अग्निहोत्र की प्रमुखता को सभी ऋषियों ने एक स्वर में स्वीकार किया है। "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" शास्त्र के इस संदेश में, इसे सबसे उत्तम कर्म माना गया है। यज्ञ के विभिन्न अंग हैं।

1. मंत्रोच्चारण—मंत्रों को अपौरुषेय, श्रुति परम्परा से माना गया है। शुद्ध, सस्वर और समयानुसार उच्चारण से ही उत्तम फल की प्राप्ति होती है। उच्चारण के समय मन, बुद्धि, चित्त की एकाग्रता होना परम आवश्यक है।

2. आहुति—घृत, सामग्री तथा अन्य हविष्य द्रव्यों से आहुतियां प्रदान की जाती हैं। विधि के अनुसार और आवश्यकता के अनुकूल अलग–अलग हविष्य द्रव्य होते हैं। दूषित और अपूर्ण

हविष्य द्रव्यों से आवश्यक फल की प्राप्ति नहीं होती है। आहुतियां दो प्रकार की होती हैं, सकाम और निष्काम। सकाम आहुतियों से मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। निष्काम आहुतियां अन्तः करण एवं बाह्य वातावरण को शुद्ध करके देवत्व की ओर प्रवृत्त कराती हैं।

3. विधि–प्रत्येक सकाम यज्ञों की भिन्न–भिन्न विधियां हैं। वेदों के ज्ञाता, तपस्वी, विद्वान, आचार्य के सान्निध्य में बैठकर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

4. समय का महत्व– सूर्य, चन्द्रमा इत्यादि ग्रह, उपग्रह का योग जैसे कि पूर्णमासी, अमावस्या तथा नक्षत्रों का चिन्तन इसमें बहुत आवश्यक है। इसका गर्भाधान, पुत्रेष्टि, व्यापार पद्धति आदि में विशेष महत्व है। निष्काम पद्धति में देश, काल, परिस्थिति के आधार से कार्य किया जाता है।

हवन यज्ञ क्यों करें?

हवन का स्वास्थ्य–रक्षा के घनिष्ठ संबंध है। अंग्रेजी भाषा के स्वास्थ्य रक्षा के लिए जिस शब्द का प्रयोग होता है–वह है 'हाईजीन'। हमें तो यह अपने 'हवन' शब्द का ही अपभ्रंश प्रतीत होता है। हवन और हाईजीन दोनों का प्रयोजन भी

एक ही है। हवन से दुर्गन्ध का नाश और सुगंध का विस्तार होता है इसी सुगंध द्वारा वायु में आक्सीजन तथा ओजोन जैसी प्राणप्रद वायु का संचार होने लगता है। हवन की यह विशेषता है कि इससे न केवल दुर्गन्ध का नाश ही होता है। अपितु सुगंध का विस्तार भी होता है। प्रत्येक नासिका इसकी साक्षी है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने हवन पर खोजकर इसे आश्चर्यजनक पाया। विदेशों में आर्यसमाज के साथ–साथ हवन–यज्ञ भी पहुंचा तो विदेशी लोगों का भी ध्यान इस ओर गया। अब वे हवन पर विशेष खोज एवं अनुसंधान कर रहे हैं। आप को यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि अमेरिका जैसे सुदूर देश में अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी स्थापित हो चुकी है। "फाईव फोल्ड पाथ" नामक संस्थान ने वाशिंगटन में अग्निहोत्र यूनिवर्सिटी को स्थापना कर अमेरिका, जर्मनी तथा कतिपय अन्य देशों में एवं भारत में भी यज्ञ के परीक्षण किये हैं एवं अखण्ड यज्ञों के परिणामों को अत्युत्तम अनुभव कर रहे हैं। अपने देश में पण्डित वीरसेन जी वेदश्रमी, डॉ॰ फुन्दन लाल अग्निहोत्री, महात्मा प्रभुआश्रित जी, स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती जी तथा अन्य अनेक महानुभावों ने हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता पर खोज की है। भारत के सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा आर्यसमाज के सुविख्यात संन्यासी स्वामी डॉ॰ सत्यप्रकाश

जी ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यज्ञ पर एक पुस्तक लिखी है। उन्होंने सिद्ध किया है कि ब्रह्माण्डीय वायुमण्डल के शुद्धिकरण का एकमात्र उपाय हवन यज्ञ ही है। यज्ञ से ही 'द्यौः शान्तिः' होगी, यज्ञ से ही 'अन्तरिक्षं शान्तिः' होगी तथा 'पृथ्वी शान्तिः' होगी और 'सर्वशान्ति' होगी तभी 'शान्तिरेव शान्तिः' की अनुभूति होगी और सा मा शान्तिरेधि अपने में भी शान्ति होगी–अन्यथा नहीं।

प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक परमेश्वर! आप अनन्तकाल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो शुभ तथा हितकर है उसे तुम बिना मांगे ही हमारी झोली में डालते जाते हो। तुम्हारे आँचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरण–शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत् पिता परमेश्वर! हममें सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो हम तुम्हारी अमृतमयी तथा प्रेममयी गोद बैठने के अधिकारी बनें। अन्तः करण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता

की, सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊंचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम आपको पुकारते और आपका आंचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो! हममें सात्विक वृत्तियां जागृत हों। क्षमा, सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहंकार शून्यता, इत्यादि शुभ भावनाएं हमारी सम्पत्ति हो। हमारे शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हों। मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, जीवात्मा पवित्र तथा सुन्दर हो। तुम्हारें स्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय, दया तथा सहानुभूति से भरा रहे। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या तथा ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो।

हे प्रभो! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणरविन्दों में हमारा जीवन समर्पित हो। इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करो।

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

सन्धिवेला (प्रातः एवं सायं) प्रार्थना के लिये एक विशेष महत्त्व रखता है। निश्चत समय पर प्रार्थना करने से सम्पूर्ण

जीवन प्रार्थनामय हो जाता है जिससे शक्ति और शान्ति प्राप्त होती है। प्रार्थना के लिये एकान्त स्थान का होना भी आवश्यक है जिससे मन की एकाग्रता उत्पन्न होती है। अन्तः—करण से मूक प्रार्थना में तल्लीन होकर मनुष्य स्वयं को भूलकर विश्वात्मा से आत्मिक वार्तालाप करता है।

पापमय जीवन का त्याग कर निष्काम भावना से ही प्रार्थना स्वीकार होती है। प्रार्थना से पूर्व प्राणायाम, आचमन तथा मार्जन मन की शीघ्र शान्ति में सहायक होते हैं। इससे आहार, विचार तथा आचार में शुद्धता आती है तथा साधक इससे ऊंचा उठता है। प्रार्थना में परमात्मा से अपनी हितकर मेधाबुद्धि की कामना करनी उचित है। प्रार्थना की स्वीकृति में विलम्ब होने से हमें व्याकुल नहीं होना चाहिये। सच्चे मन से की गई प्रार्थना कभी बेकार नहीं जाती। समुद्र में गोता बार—बार लगाने से मोती अवश्य हाथ लगते हैं।

न्यायकारी परमात्मा की कर्मफल व्यवस्था में सच्ची आस्था रखने वाला पापों के फल भोग से बचने की प्रार्थना कभी नहीं करता। वह तो आगामी पापों से छुटकारा पाने की प्रार्थना करता है और वह अवश्यमेव स्वीकृत होती है।

प्रार्थना का तात्पर्य उद्योग तथा पुरुषार्थ की उत्पत्ति

एवं उपाय करना है। पुरुषार्थ सदा प्रारब्ध से प्रबल होते हैं। प्रार्थना वह कुंजी है जिसके द्वारा सुख विशेष के द्वार खुल जाते हैं। परमात्मा पुरुषार्थी की सहायता अवश्य करते हैं।

5. इदन्न मम और स्वाहा–जैसे शरीर में जीवन के लिए श्वास–प्रश्वास की आवश्यकता होती है वैसा ही यज्ञीय आहुतियों में इनका स्थान है। "स्वाहा" के उच्चारण से मनोभावना की पूर्णता होती है और "इदन्न मम" से निष्काम फल की प्राप्ति होती है, जैसे–"सोने में सुहागा"। यही वे शब्द हैं, जिनसे साधक अपनी साधना को पूर्ण करता है।

6. समिधा– आम, गूलर, पीपल आदि विभिन्न प्रकार की समिधाओं का यज्ञकुण्ड में चयन किया जाता है। समिधा जीवन का प्रतीक है। जैसे अग्नि–के उद्दीपन के लिए समिधाओं की आवश्यकता होती है, वैसे ही उन्नत जीवन के लिये शारीरिक साधनारूपी तपाग्नि की जरूरत होती है। चयन की प्रक्रिया अनुशासित जीवन की ओर प्रेरणा प्रदान करती है। मनोकामना पूर्णता हेतु अथक परिश्रम, साधना की ओर स्वयं को प्रवृत्त करना चाहिए। हरेक सकाम यज्ञ के लिए अलग–अलग समिधाओं का प्रयोग करना चाहिए।

प्रार्थना क्या है?

"प्रार्थना" शब्द का अर्थ "मांगना" या "याचना" नहीं है परन्तु "चाहना" है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने प्रार्थना को "हृदय के भाव को सम्मुख रखना" कहा है। महात्मा नारायण स्वामी ने प्रार्थना को "इच्छाशक्ति का विकास" कहा है। जिससे जीवन की दिशा को नया मोड़ मिलता है, जिसमें उसकी सफलता निहित है। इच्छाशक्ति से पूर्ण पुरुषार्थ की कामना उत्पन्न होती है और उत्तम कर्मों की सिद्धि होती है। महर्षि दयानन्द के अनुसार प्रार्थना अन्तः करण को शुद्ध एवं सशक्त बनाती है और यह पापमय जीवन से उबरने के लिये दिव्य नौका का काम करती है। स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि आत्मशुद्धि के लिये "प्रार्थना" से बढ़कर कोई अन्य अस्त्र संसार में नहीं है।

प्रार्थना केवल सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तर्यामी, सर्वव्यापक परमेश्वर से ही करनी उचित है। प्रार्थना द्वारा की गई पुकार को परमात्मा अवश्य सुनता है।

प्रभु स्तुति

ओ३म् तद् विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः।
दिवीव–चक्षुराततम्।।

नमः शम्भवाय च
मयोभवाय च
नमः शंकराय च
मयस्कराय च
नमः शिवाय च
शिवतराय च।।

नमस्कार कल्याण स्वरूपम, नमस्कार हो प्रभु अनुपम।
नमस्कार सुखों के दाता, नमस्कार हो ईश विधाता।।
नमस्कार हो शान्ति भण्डारा, नमस्कार सौ–सौ बार हमारा।।

सदा सदा के साथी मेरे
तेरी जय जयकार करूं ।
हर पल सिमरूं नाम तिहारा
तेरा ही गुणगान करूं ।
तप संयम का जीवन राखूं
क्षमा का श्रृंगार करूं।।
तेरी जय जयकार करूं
भव सागर से पार तरूं।।

अन्तर्यामी नाथ तुम, जीवन के आधार।
जो तुम छोड़ो बांह तो, कौन लगाये पार।।

गीत

आनन्द स्रोत बह रहा पर तू उदास है।
अचरज कि जल में रह के भी मछली को प्यास है।।
फूलों में ज्यों सुवास ईख में मिठास है।
भगवान् का यों विश्व के कण–कण में वास है।।
टुक ज्ञान चक्षु खोल के तू देख तो सही।
जिसको तु ढूंढ़ता वे सदा तेरे पास है।।
कुछ तो समय निकाल आत्मशुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य ना केवल विलास है।।
आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक।
तू जब तलक 'प्रकाश' इन्द्रियों का दास है।।

गीत

मन मन्दिर में नित पूजा मैं भगवान् तुम्हारी किया करूँ।
आंखों के तरल अश्रु मोती, निज भेंट तुम्हारी दिया करूँ।।
आंखों से तुम्हारी छवि निरखूं, कानों से तुम्हारे बैन सुनूं।
वाणी से मैं पावन 'प्रकाश', प्रिय नाम तुम्हारा लिया करूँ।।
पीकर जो तुरन्त उतर जाए, ऐसी हाला का पीना क्या।
पी करके जो कभी न उतरे, वह प्रेम पियाला पिया करूँ।।

गीत

मेरे देवता मुझको देना सहारा।
कहीं छूट जाए न दामन तुम्हारा।।
तेरी ज्योति से जगमगाती है दुनियां।
तेरी गति से गति पाती है दुनियां।
तू ही जग की नैया का सेवन हारा।।
तेरे रास्ते से हटाती है दुनियां।
इशारों से मुझ को बुलाती है दुनियां।
न देखूं मैं दुनियां का झूठा इशारा।।
सिवा तेरे मन में समाए न कोई।
लगन का ये दीपक बुझाए न कोई।
तू ही मेरी नैया तू ही है किनारा।।

गीत

प्रभु प्यारे से जिसका संबंध है,
उसे हर दम आनन्द ही आनन्द है।
झूठी ममता से करके किनारा
लेकर सच्चे पिता का सहारा,
हुआ उसकी रजा में रजामंद है
उसे हर दम आनन्द ही आनन्द है।।
जिसकी कथनी में कोयल सी चहक है।
जिसकी करनी में फूलों सी महक है।
प्रेम नम्रता की जिसमें सुगंध है।
उसे हर दम आनन्द ही आनन्द है।

निंदा चुगली न जिसको सुहावे।
बुरी संगत की रंगत न भावे।
सतसंगत ही जिसको पसन्द है।
उसे हर दम आनन्द ही आनन्द है।
दीन दुखियों के दुख जो बंटाए।
बनके सेवक भला सबका चाहे।
नहीं जिसमे घंमड और पाखंड है।
उसे हर दम आनन्द ही आनन्द है।

भजन

प्रभु जी तुमसे लागी लगन मत तोड़ना, लागी लग्न मत तोड़ना।

1. जल है गहरा नाव पुरानी।
जल है गहरा नाव पुरानी।
बीच भंवर मत छोड़ना।

2. तू ही मेरा सेठ है तू ही साहुकार है।
तू ही मेरा सेठ है तू ही साहुकार है।
ब्याज पे ब्याज मत जोड़ना।
प्रभु जी तुम से लागी लगन मत तोड़ना।

3. मैं तो दास हूँ तेरे चरणों का।
मैं तो दास हूँ तेरे चरणों का।
हाथ पकड़ मत छोड़ना।
प्रभु जी तुमसे लागी लगन मत तोड़ना।

सच्चा प्रहरी

हिन्दू कहो, न मुसलमान था
उसका जीवन पढ़ो सच्चा इन्सान था
भगत राम के परिवार में,
मास्टर राम भेजा का पहला चिराग था।
जलकर भी रोशनी देता रहा
उसी से उज्ज्वल सारा परिवार था।
तीर्थ यात्रा की कोई जरुरत नहीं,
वह स्वयं ही तीर्थ राम था।
आर्य जगत् का सच्चा पहरी,
जीवन ही उस का आर्य था।
कर्त्तव्य, निष्ठा, कड़ी मेहनत
वह सच्चाई का अवतार था।

रमेश चन्द्र गुप्ता

माननीय श्री तीर्थराम जी गुप्ता के लिये श्रद्धा सुमन

आया था इस दौर में इक वीर सिपाही।
दुखियों का दिलदार दीनों का सहाई।
1. हर वक्त लबों पे तेरे रहती थी मुसरर्त।
जब देखो इक देवता की सी लगती थी मूरत।
तेरे दिल में बसी जैसे दयानन्द की सूरत।
जनता का तूं रहबर था ऐ मर्द सिपाही।

आया था इस दौर में इक मर्द सिपाही।

2. तेरा शौक था मज़लूमों की खिदमत करना।
तू बात करे छूटे जैसे प्यार का झरना।
आये जो पास तेरे तेरा हंस हंस कर मिलना।
आदत थी तेरी हर शख्स की करना भलाई।
आया था इस दौर में इक वीर सिपाही।

3. वायदा किया जिस से भी उसे पूरा किया तूने।
हर तड़पते हुये दिल का गम दूर किया तूने।
सच बोलने पर हर मर्द को मज़बूर किया तूने।
हम बन्दे है खुदा के सब उस की खुदाई।
आया था इस दौर में इक वीर सिपाही।

4. गैरों को भी तूने जो अपना बनाया।
ठुकराये हुवे बन्दों को सीने से लगाया।
राह भटके हुवे थे जो उन्हें राह दिखाया।
तूँ प्यार का सागर था ओ मर्द इलाही।
आया था इस दौर में इक वीर सिपाही।

5. अमन का पुजारी था वेदों का उपासक।
विद्वानों का खादिम तूँ सन्तों का आशक।
कहते हैं ज्ञानी तू ईश का सादक।
तूने कितने अनाथों की थी लाज बचाई।
आया था इस दौर में इक वीर सिपाही।

6. कोई हिन्दु मुसलमां सिख पारसी मिल जाये।
केसर को भी तू रब का रूप बताये।
सच बोलने की तुझमें थी हिम्मत ऐ 'तीरथ राम'।
हर घर में तूने प्यार की शमां जलाई।
आया था इस दौर में इक वीर सिपाही।

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम्। दोग्ध्रीर्धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा, जिष्णू, रथेष्ठाः सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।

(युज॰ 22/22)

ब्रह्मन् स्वराष्ट्र में हो, द्विज ब्रह्म तेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी।।
होवें दुधारु गौएं, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही।।
बलवान् सभ्य योद्धा, यजमान पुत्र होवें।
इन्छानुसार बरसे, पर्जन्य ताप धोवें।।
फल–फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग–क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी।।

आर्यसमाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।
4. सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहियें।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर के करने चाहियें।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथोयोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

ओ३म्

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

ओ३म्

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद

वेद संसार की सबसे प्राचीन पुस्तक है परमपिता परमात्मा द्वारा सृष्टि के आरम्भ में सृष्टि-संचालन हेतु दिया गया ज्ञान है। आओ, यदि हम ज्ञान-विज्ञान के भण्डार के मूल स्रोत को जानना चाहते हैं तो वेद अवश्य पढ़ें

हिन्दी तथा अंग्रेजी अनुवादों में उपलब्ध

RIGVEDA IS THE OLDEST BOOK IN THE WORLD

आर्य समाज मानवमात्र की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिए कार्य करने वाली विश्वव्यापी संस्था है। भारत के धार्मिक और सामाजिक, पुनर्जागरण के क्षेत्र में आर्यसमाज का विशेष योगदान रहा है। आर्यसमाज सत्य के ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए निरन्तर कार्य करता रहता है। आप भी परिवार समाज व राष्ट्र की सुख समृद्धि व शान्ति तथा जन सेवा के लिए अपने निकट के आर्य समाज से जुड़ें।

Lakshmi Art Printers # 9419182553

मूल्यः— पढ़ो और पढ़ाओ